इत्तेहाद और इस्लामी भाइचारगी

इमादुल उलमा अल्लामा सै0 मुहम्मद रज़ी साहिब क़िब्ला मुजतहिद

किसी समाज की ज़िन्दगी, तरक़्क़ी और हर क़िस्म की फलाह व बहबूद सिर्फ इसी बात पर मौक़ूफ है कि इसके अफराद पूरे इत्तेहाद व इत्तेफाक़ के साथ ज़िन्दगी बसर करें। इसका मतलब यह हुआ कि जमाअत और क़ौम का बाहमी इत्तेफाक़ व इत्तेहाद ही हक़ीक़त में उसकी ज़िन्दगी है और उसका इन्तेशार और अफ़रातफ़री उसकी मौत है। पैग़म्बरे इस्लाम स॰ की बेअ्सत के वक़्त अरबों में जो फसाद और आपस की नाइत्तेफाक़ियाँ झगड़े और ला क़ानूनियत फैली हुई थी वह कौन नहीं जानता। उनके बहुत ही मामूली झगड़े बड़ी–बड़ी लड़ाइयों की शक्ल इख़्तियार करके सारे मुल्क के लिए एक आफत और अज़ाब बन जाते थे और बकरियों, भेड़ों, ऊँटों और ज़मीन या छोटे–छोटे इज़्देवाजी मसाएल में ज़रा–ज़रा से इख़्तेलाफात क़ौम की पूरी ज़िन्दगी को जहन्नम बना दिया करते थे। ज़ाती इक़तेदार, लालच, फिरक़ावाराना ज़हनियत, तरह–तरह के तास्सुब, गुरूर और तकब्बुर, ग़रज़ उन तमाम अख़लाक़ी बुराइयों ने उनके लिए इत्तेहाद और बाहमी तनज़ीम का कोई तसव्वुर बाक़ी न रखा था। ज़ाहिर है कि ऐसी हालत में जब आपस का इत्तेहाद न हो, तनज़ीम बाक़ी न रहे तो कोई जमाअत और कोई समाज कभी ज़िन्दगी और उसकी बुलन्दियों का तसव्वुर भी नहीं कर सकता, जब हर आदमी को हर तरफ से ख़तरे घेरे हुए हों और उसे हर लम्हा और हर वक़्त बेचैनी, घबराहट और ख़ौफ का सामना हो तो फिर वह किस तरह ज़िन्दगी की बलन्द क़द्रों को हासिल करने में कामियाब हो सकता है। वह शाख़ जो हवा के झक्कड़ों और तूफान के थपेड़ों से काँप रही हो उस पर आशियाना नहीं बनाया जा सकता। बस यही हालत इन्सानी ज़िन्दगी की भी है। जब तक बाहमी इत्तेहाद और तनज़ीम न हो, एक फ़र्द के दिल में अपने दूसरे क़ौमी भाई के दुख दर्द का एहसास न हो, ज़ाती फाएदे को जमाअती और क़ौमी फ़ायदों पर कुर्बान करने का जज़्बा न पाया जाता हो उस वक़्त तक इन्सान ज़िन्दगी की सारी बलन्दियों और कामियाबियों से महरूम रहेगा।

सरवरे काएनात (स॰) की बेअ्सत का ज़माना वह था जब दुनिया ला क़ानूनियत और बदनज़मी की आग में जल रही थी और हर तरफ अफ़रातफ़री और इन्तेशार का दौर दौरा था। आपने ख़ानदानी रिश्तों और दूसरे

तमाम रिश्तों से ज़्यादा मज़बूत और ऊँचा रिश्ता लोगों को बताया जिसने उस वक़्त की मग़रूर और सरकश अरब क़ौम की सिरे से सोच ही बदल दी। यह रिश्ता दीन का था, यह रिश्ता हक़ और दयानत का था, यह रिश्ता सच्चाई और ख़ुदा परस्ती का था और यह इस्लाम और ईमान का रिश्ता था जिससे वह लोग जो नसली और ख़ानदानी तफरीक़ और इम्तियाज़ का शिकार बनकर आपस में एक दूसरे के ख़ून के प्यासे हो चुके थे, बाहम मिल बैठे और सारे झगड़े भूल कर आपस में भाई–भाई बन गए। यह इस्लाम ही था जिसने ख़ानदानी और क़बाएली झगड़ों को मिटाकर सबको दीन, भाइचारगी और मुहब्बत के रिश्ते में जकड़ दिया था। यह इस्लामी बिरादरी ही का रिश्ता वह था जिसमें दुनिया व आख़िरत की तमाम भलाइयाँ और हर तरह की फ़लाह और कामियाबी, तरक़्क़ी और नजात के राज़ छुपे हुए थे। इस दीनी रिश्ते ने सारे मुसलमानों के दिलों में आपस की मुहब्बत, मेल–जोल, इत्तेहाद व इत्तेफाक़, जमाअती बरतरी और क़ौमी व मिल्ली तनज़ीम की एक नई रूह फूँक दी उनकी आपस की दुश्मनियों को मिटा दिया और जो लोग मक्का से हिजरत करके मदीने में बस गए थे उनमें और मदीने के मक़ामी मुसलमानों के दरमियान दीनी और मज़हबी रिश्ते की बरकत से ऐसी मुहब्बत और एकता पैदा हो गई कि वह अपने ख़ानदानी, नसली और ख़ून के रिश्तों को भी इस नये रिश्तें पर कुर्बान करने लगे। आपस की पुरानी दुश्मनियाँ हमेशा के लिए फना हो गईं और जो लोग एक दूसरे को बदतरीन दुश्मन और क़ातिल की निगाह से देखा करते थे वह सगे भाइयों की तरह एक दूसरे पर फिदा होने लगे। अल्लाह के मुक़द्दस रसूल स॰ ने लोगों को उसका यह पैग़ाम सुनाया थाः

अनुवाद– ''ऐ ईमान वालो! ख़ुदा से डरो इस तरह जैसा कि उससे डरने का हक़ है और तुम्हें मौत न आए मगर ऐसी हालत में कि तुम सच्चे मुसलमान हो और (देखो) तुम सब के सब मिलकर इलाही रिश्ते को मज़बूत थाम लो और आपस में टुकड़े–टुकड़े न हो जाओ और तुम अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो कि तुम आपस में एक दूसरे के दुश्मन थे (और एक दूसरे के ख़ून के प्यासे थे, यह अल्लाह की ज़ात है) जिसने तुम्हारे दिलों को आपस में जोड़ दिया फिर तो तुम सब (आपस में) भाई–भाई बन गए।''

इस्लामी तालीम और इस्लामी तहज़ीब की बुनियाद जिस क़ानूने ख़ुदावन्दी पर है उसका सबसे बड़ा तक़ाज़ा यह है कि उस नेमते इत्तेहाद से फायदा उठाया जाए जिसकी तरफ हमको तवज्जो दिलाई गई है और इस्लाम ने जिसका हमें हुक्म अता किया है क्योंकि

यही ऐसा अकेला रिश्ता है जिसमें हमारी ज़ाती और इन्फेरादी, क़ौमी और इज्तेमाई, दीनी और दुनियावी हर तरह की फलाह मौजूद है और यही हमारी सरबुलन्दी और इज़्ज़त व अज़मत है। इसके बरख़िलाफ अफरा–तफरी और बदनज़मी और इन्तेशार हमारी मौत है अगर हम लड़ाई–झगड़े का शिकार हो गए, अगर हमारी सफों में अबतरी और ला क़ानूनियत फैल गई तो हमें इसका यक़ीन रखना चाहिए कि हम अपनी अन्दुरूनी और बाहरी आज़ादी की नेमत से महरूम हो जाएँगे और इस्लाम और मुसलमानों के पुराने दुश्मन जो हमें तबाह व बर्बाद करने की हर वक़्त ताक में रहा करते हैं वह अपनी तरकीबों में और अपनी साज़िशों में कामियाब हो जाएँगे। कुर्आने करीम ने हमको बार–बार तम्बीह की है और बार–बार हमें इस ख़तरे से आगाह कर दिया है। हमें चाहिए कि हम अपनी ज़िन्दगी के लिए तबाही को दावत न दें और अपने इस्लामी इत्तेहाद को किसी ना समझी का शिकार न होने दें। सूरए अनफाल में अल्लाह का इरशाद है:

अनुवाद– ''अल्लाह और उसके रसूल स० की इताअत करो, और आपस में झगड़े न करो (यानी भरपूर इत्तेफाक़ व इत्तेहाद क़ानून और क़ायदे के साथ ज़िन्दगी बसर करो) क्योंकि अगर तुम आपस में मुत्तहिद न रहोगे तो हिम्मत हार जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी।''

सरवरे काएनात (स०) का इरशादे पाक है कि सारे मुसलमान आपस में एक दूसरे के साथ मुहब्बत करने में एक जिस्म और एक बदन की हैसियत रखते हैं यानी अगर बदन के एक हिस्से को कोई तकलीफ पहुँचती है तो पूरा बदन इस तकलीफ का एहसास करने लगता है बस इसी तरह इस्लामी समाज भी एक जिस्म है और सारे मुसलमान इसके हिस्से और सच्चा मुसलमान वही है जिसके दिल में अपने दूसरे भाई के दुख दर्द का पूरा एहसास हो और उसके दुख को दूर करने और उसको आराम देने की उसी तरह कोशिश करे जैसे वह ख़ुद अपने दुख को दूर करने और अपने आप को आराम देने की कोशिश करता है। फिर आपने एक दूसरे मौक़े पर अपने एक हाथ की उँगलियों को दूसरे हाथ की उँगलियों में डाल कर दिखाया और इरशाद फरमाया कि देखो एक हाथ की उँगलियाँ जब दूसरे हाथ की उँगलियों के साथ मिल गईं तो उनमें कैसी कुव्वत पैदा हो गई जो इस इत्तेहाद के पहले कभी हरगिज़ न थी बस इसी तरह तुम्हें आपस में एक दूसरे के साथ इत्तेहाद व इत्तेफाक़ से ज़िन्दगी बसर करना चाहिए ताकि तुम्हारी इन्फेरादी और इज्तेमाई ज़िन्दगी और तुम्हारी क़ौमी और मिल्ली सरबुलन्दी इस्तेहकाम, सालिमियत और इज़्ज़त व वक़ार तुम्हारे दुश्मनों के क़ब्ज़े के बाहर हो जाए। □□□